श्री राम

नव वर्ष २००६ का संदेश

आप सबके श्रीचरणों में मेरा कोटि कोटि प्रणाम। कृपया स्वीकार कीजियेगा। वर्ष २००६ का शुभारम्भ है, परमेश्वर कृपा करें यह वर्ष आप सबके लिए मंगलमय हो। सारा जीवन मंगलमय हो। अतिशय मंगल कामनायें,शुभकामनायें। परमेश्वर की कृपा, मेरे गुरुजनों के आशीर्वाद सदा सबको प्राप्त–उपलब्ध होते रहें।

कल तक वर्ष २००८ था, आज २००६ है। प्रथम प्रभात है नव वर्ष की। मात्र date ही बदली है या हमारा जीवन भी कुछ बदला है ? कल ३१ दिसम्बर थी, आज १ जनवरी। सामान्य व्यक्ति के लिए तो ऐसा ही है कि date बदल गई,हम सामान्य तो नहीं हैं, साधक हैं। एक वर्ष और बीत गया है, सावधान हूजियेगा। कोई नहीं जानता कितने दिन जीना है कितने महीने, कितने वर्ष। साधक वही जो सावधान रहे।

आज थोड़ा शब्द बदलने की आवश्यकता महसूस हो रही है इसलिए पहले बल दिया करता था अच्छे साधक बनने पर। आज आपसे निवेदन कर रहा हूं, शिष्य बनने के लिए। अच्छे शिष्य बनियेगा, अध्यात्म में यही सम्बन्ध है शिष्य और गुरु का, जो गुरु की या परमात्मा की सारी शक्तियों को गुरु के माध्यम से शिष्य में उड़ेल देता है। आप बहुत माहिर हैं बहनें, बिटिया, मां, पुत्र बनने में, सब कुछ बनने को तैयार हैं, जिनका शरीर के साथ सम्बन्ध है। शिष्य बनने को तैयार नहीं हैं। आज इस वर्ष के शुभारम्भ पर बहुत गम्भीर बात आपजी से अर्ज कर रहा हूं, हम सबको शिष्य बनना है। यदि गुरु से कुछ प्राप्त करना है और गुरु के माध्यम से परमात्मा से प्राप्त करना है तो यही चैनल है। आप गुरु को अपना बाप बना लीजिये, बड़ा भाई बना लीजिये, इन सम्बन्धों से प्रगति रुक जायेगी, शिष्य ही बनना होगा। शिष्य ही ग्रहणशील हो सकता है। शिष्य ही विनम्र बन सकता है, झुकना सीख सकता है, निरभिमानी हो सकता है, इनके हुए बिना व्यक्ति ग्रहणशील नहीं हो सकता और ग्रहणशील हुए बिना परमात्मा की कृपा नहीं होती। आपने अपनी अपनी पाईप बंद कर रखी है, शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करके उसमें रुकावट डाल रखी है। पुत्री, मां, बाप, बेटा,सब कुछ बनने को तैयार हैं हम, आसान बातें हैं। शिष्य बनना बहुत कठिन है, कोई बनने को तैयार नहीं। पुनः अर्ज करुंगा, बिना शिष्य बने, न ही गुरु-कृपा प्राप्त कर सकोगे और न ही परमात्मा की कृपा के पात्र बन सकोगे। शिष्य बनियेगा।

प्रथम बात आज यहां से शुरु हुई – हम सबको शिष्य बनना है, आध्यात्मिक नाता है यह कोई शारीरिक नाता नहीं है, यह नाता उससे है जो कभी मरता नहीं। शरीर तो मरता है। इसलिए शारीरिक सम्बन्ध बनाना अज्ञानता का चिन्ह है। मत बनाईयेगा। शिष्य

बनियेगा। यह रुहानी नाता शाश्वत नाता है, eternal जो कभी न टूटने वाला, अनादि काल से चला आ रहा है। गुरु को पहचानियेगा, गुरु शरीर नहीं है, गुरु तत्व है, जैसे परमात्मा तत्व है। यहां से चलोगे तो प्रगति बहुत आसान हो जायेगी, तीव्र हो जायेगी, विमान में बैठ जाओगे, विनम्र बन जाओगे। शरीर के साथ सम्बन्ध जोड़े रहोगे तो कभी साईकल पर,कभी पैदल, गिरते-उठते,गिरते-उठते,जीवन खत्म हो जायेगा, कहीं भी पहुंच नहीं पाओगे।

एक शिष्य संत के पास गया है, जाकर प्रणाम किया, चरणवन्दना की। "मेरे अन्दर न बुद्धि, न शब्द, न भाव है–असमर्थ हूं। मैं नहीं जानता कि मैं क्या पूछना चाहता हूं इसलिए मेरे मन में कोई प्रश्न नहीं है। मुझे यह भी पता नहीं आप क्या कुछ देना चाहते हैं। यदि मुझे कहने का पात्र समझते हो, तो जल्द कह दीजियेगा, कुछ देने के लिए मुझे पात्र मानते हो तो ये झोली आपके सामने है डाल दीजियेगा।" ये संत सुगढ़ संत है, इस शिष्य की बात सुन, मुग्ध हो गये। संत महाराज ने आंख बंद कर ली, शिष्य ने भी आंख बंद कर ली। कुछ देर दोनों आंख बंद करके मौन भाव से बैठे रहे। थोड़ी देर के बाद शिष्य ने आंख खोल कर प्रणाम किया, आंखों से आंसू बह रहे थे। "वाह महाराज! बहुत सुन्दर, आपकी अपार कृपा हो गई, अपार कृपा हो गई, अपार कृपा हो गई।" आसपास के लोगों ने पूछा,"इसे क्या हुआ, संत से इसे क्या मिला"? संत कहते हैं,"सब कुछ मिल गया,सब कुछ मिल गया।" "महाराज! न हमने आपको देते देखा, न उसे मांगते ही देखा है, क्या ले गया, क्या कुछ दे दिया आपने उसे?" "अरे सब कुछ ले गया। समझदार पात्र था, बिल्कुल तैयार था, उसे कहने की आवश्यकता नहीं पड़ी, कुछ मैंने अपने मन से कहा, उसके मन ने ग्रहण कर लिया। दोनों के मन मिलकर दो नहीं एक हो गये। सब कुछ दे दिया।" संगत स्तब्ध मौन रह गई । शिष्य बनियेगा। इधर लगता है यह उच्च श्रेणी है शिष्य की, जिसने अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया। मन समर्पित हो जाता है तो सर्वस्व समर्पित हो जाता है। गुरु और शिष्य का मन दोनों मिल कर परमात्मा के मन को खींच लेते हैं। ये दो नहीं होते, ११ नहीं होते, एक हो जाते हैं। उसमें इतनी ताकत आ जाती है कि खींच लेते हैं सब।

एक सेठ का पुत्र नालायक है, बाप दुःखी है, चिन्ता का विषय, बेचैन जिन्दगी है। सुना अमुक महात्मा है, दर्शन से सभी का जीवन परिवर्तित होता है, अपने बेटे को ले जाओ वहां पर, हो सकता है उसकी किस्मत बदल जाये,और साथ ही साथ तेरी किस्मत भी बदल जाये। उस महात्मा के पास से, उस स्थान से कोई खाली नहीं गया। कुछ मांगने की जरुरत नहीं पड़ती। मांगने वाला तो भिखारी है, लेने वाले स्थानों से मांगने की आवश्यकता नहीं पड़ती। मात्र अपने आपको उनकी चरणशरण में ले जाने की आवश्यकता है। सूर्य से धूप मांगनी नहीं पड़ती, ठंडी जगह जा कर ठंडक मांगनी नहीं पड़ती, चन्द्रमा के पास

जाकर उससे शीतलता, उसकी ज्योत्स्ना मांगनी नहीं पड़ती, अपने आप सब कुछ मिलता है। मांगना अर्थात विश्वास नहीं है। भिखारी बनना अच्छा लगता है, इसलिए इस जगह से कुछ नहीं मिला तो दूसरी जगह चले गये, दूसरी जगह नहीं तो तीसरी जगह चले गये, हम professional भिखारी बन गये हुए है। न ही हम साधक रहे हैं, न ही हम शिष्य बनना चाहते हैं।

सेठ ने संत के पास पहुंच कर प्रणाम किया। संत ने दोनों को देखा, कहा,"पांच प्रश्न मुझसे पूछ लो।" "ठीक है महाराज।" पहला प्रश्न सेठ पूछता है,"महाराजधिराज! यदि अवसर मिले परमात्मा से कुछ मांगने का तो क्या मांगना चाहिये ?" हमारे पास अवसर है परमात्मा के दरबार में बैठे हुए हैं इनसे मांगो, इन्सान से नहीं। इन्सान से मांगने से कभी किसी का कुछ नहीं बनता। बनता है तो परमात्मा के देने से। Why not contact Him। वह कहां दूर बैठा है, उसे ढूंढने खोजने व पाने की आवश्यकता है, वह तो भीतर विराजमान है, इतना विश्वास हो तो फिर काम बन गया। गुरु उसे कहा जाता है, जो आपके अन्दर यह विश्वास पैदा कर देता है, कि आपका परमात्मा आपके भीतर बैठा हुआ है। Contact Him there, अपना फोन घुमाईये। संत महात्मा कहते हैं तेरे पहले प्रश्न का उत्तर है,परमात्मा से परमार्थ मांगो, भक्तिमय जीवन मांगो। जब तक जीवन में भक्ति नहीं आती तब तक जीवन में पूर्णत्व या उन्नति नहीं हो सकती, जीवन सफल नहीं हो सकता। परमार्थी व्यक्ति का जीवन किस प्रकार का होता है ? परमार्थ धन को प्राप्त किये हुए, धनी-परमार्थी का क्या चिन्ह है, किस प्रकार की उसकी विचारधारा हो जाती है ? किसी ने पूछा,"भजन पाठ करने से, परमात्मा की उपासना करने से,परमात्मा की भक्ति करने से क्या व्यक्ति मृत्यु से बच सकता है ?" उत्तर देने वाले ने कहा,"हां ! बिल्कुल बच सकता है, पर बचा रह नहीं सकता। मरना तो है ही एक दिन। उस समय मृत्यु से बच जाओगे लेकिन एक न एक दिन तो मरना है। ये परमार्थ सिखाता है।

कुछ और चीज मांगनी हो तो अगली चीज ईमानदारी और मेहनत से कमाया हुआ धन मांगो। इसी की कदर है परमात्मा के घर में। वैसे आप बेईमानी करके अरबपति करोड़पति हो जाओगे, उसकी दृष्टि में कुछ नहीं। काला धन black money बहुत है, दानी भी बहुत हैं, कहीं न कहीं उसे फैंकना ही है। एक बात स्पष्ट करुं, ऐसे दान की गति क्या होती है। बड़े भावचाव से लोग दान करते हैं, महत्व भी बहुत है, कोई शक नहीं। कलयुग में दान का बहुत महत्व है। ईमानदारी के बाद तीसरा प्रश्न है, उदारता–मानो परमात्मा के दिए से लुटाना। लेकिन हमने दान को विकृत कर दिया है, काले धन से जो दान दिया जाता है फल तो मिलेगा, लेकिन किसको, जिसका धन है उसको या जिसने दिया है उसको ? फल बेचारा बेचैन है, वह तो दान के साथ जुड़ना चाहता है, लेकिन है यह

किसका, जिसने दान दिया है उसका या जिसका यह पैसा है? परमात्मा ऐसे दान का फल नष्ट कर देता है, कुछ नहीं मिलता। तीन बातें हो गई परमार्थ, ईमानदारी–मेहनत की कमाई, उदारता। परमात्मा से लेकर देना सीखियेगा।

चौथी चीज कहा, यह मांगो कि परमेश्वर मुझे सन्मार्ग पर चलाओ, कभी कुमार्ग पर मैं न चलूं। परमात्मा को पीछे न चलाओ। हमें ये चाहिये, हम ये बनना चाहते है, लम्बी लम्बी सूची, जैसे परमात्मा हमारा नौकर है। जैसे किसी नौकर को सूची देते हैं, कि बाजार जाकर ये सब्जी खरीद लाना। ऐसे ही परमात्मा के आगे रखते हैं। कोई रोग न लगे स्वयं को, या अपनों को, इत्यादि लम्बी लम्बी सूचियां हमने तैयार कर रखीं है। संत कहते हैं परमात्मा के पीछे पीछे चलना सीखो, उसे अपनी मति के अनुसार, तुच्छ–छोटी मति के अनुसार कभी नहीं चलाना।'' यदि इसके बाद भी कुछ मांगने की जरुरत पड़े तो एक बात और मांग लेना, सबके साथ मेरा व्यवहार सद्व्यवहार हो।'' गुरु महाराज कहते हैं,''लाला! इन चीजों को पाने के बाद फिर परमात्मा से जिन्दगी में कुछ मांगने की जरुरत नहीं पड़ती।'' पुत्र पास ही बैठा सुन रहा था। संत कहते हैं,''जिसके अन्दर ये पांच गुण नहीं हैं वह तो धरती पर बोझ है।'' ये बात पुत्र को लग गई है। कहते हैं थोड़ी सी सत्संगति से उसका जीवन भी बदल गया। एक निकम्मे, तामसी, कामचोर का जीवन बदल सकता है तो हम तो गुरुजनों के शिष्य हैं, हमारा जीवन क्यों नहीं बदल सकता। याद रखियेगा ये पांच गुण, यही हमारे जीवन में उतरने चाहियें, मांगना हो तो परमात्मा से ये मांगो। वे जो हम मांगते हैं, वह मांगने योग्य नहीं हैं, सबकी सब अशान्ति देने वाली, दुःख देने वाली चीजें हैं। कैसी मार्मिक बातें संत जनो ने कहीं हैं, हम सुनते जरुर हैं लेकिन पल्ले नहीं बांधते।

जिज्ञासु ने कहा,''मेहरबानी करके मुझे अनेक आदेश, उपदेश न दीजियेगा। सारों का सार एक शब्द में मुझे अपने मुख से कह दीजियेगा जो मैं अपने जीवन में अपना सकूं। थोड़ी सी जिन्दगी बाकी है, मैं लम्बी यात्रा तय नहीं कर सकता। अब मेरे में समर्थ भी नहीं हैं।'' संत सुगढ़ उसकी जिज्ञासा, पिपासा सब चीज को देख कर कहते हैं,''वत्स! जिस शब्द को तू ढूंढ रहा है वह शब्द है 'प्रेम'। जो पांच बातें पहले कही गई हैं वह सब इस प्रेम में समाहित हैं। इसीलिए तो संत महात्मा कहते हैं प्रेम ही राम है राम ही प्रेम है। Love is God, God is Love। इसमें कोई दो राय नहीं है। प्रेम मांगना मानो परमात्मा को मांग लेना।

भरतजी महाराज चित्रकूट जा रहे हैं। प्रभु राम को मनाने के लिए। भरत क्षत्रिय है। क्षत्रिय का स्वभाव है दान देना, भीख मांगना नहीं। भरत जी महाराज अपने स्वभाव को छोड़ कर आज भिखारी बने हुए है। जो कोई भी रास्ते में आता है, झोली उसके सामने फैला देते हैं। भरत तीर्थराज प्रयाग पहुंचे हैं। ''मां! तू कल्याणी है, जो कोई तेरे से मांगता है तू

मनोकामना को पूर्ण करने वाली है, मेरी मनोकामना भी पूरी कर। मुझे अर्थ में रुचि नहीं, चार पुरुषार्थ है, उन चारों को छोड़ दिया है। न मुझे अर्थ, कर्म, धर्म और न ही मुझे सद्‌गति या मोक्ष चाहिये। प्रभु राम के श्री चरणों में, प्रभु राम से जन्मजन्मातर मेरी प्रीति-रति ही बनी रहे। ऐसा वरदान मुझे दें। ऐसी प्रीति जिसकी पूर्णमासी कभी नहीं आती। पूर्णमासी नहीं आती तो अमावस्या कहां से आयेगी। प्रतिक्षण वर्धनम, हर क्षण जिसमें वृद्धि हो ऐसी प्रीति मुझे दें। मोक्ष नहीं चाहिये, मुझे श्रीराम चरणों में रति, प्रीति चाहिये।

वर्णन आता है, देवर्षि नारद बाल भगवान की लीलाओं को देखने के लिए सदा आते है। भगवानश्री नन्द बाबा के घर की देहरी को cross करने की कोशिश कर रहे हैं, बेचारे सफल नहीं हो रहे। मैया से गुहार कर रहे हैं। देवर्षि नारद भगवान की इस प्यारी, निराली लीला को देख कर बहुत आनन्दित हो रहे हैं। यमुना किनारे जाकर लीला को बार बार याद करके रो रहे है। किसी ने पूछ लिया,"किस लिये रो रहे हो।" कहा,"मैं उनके लिए रो रहा हूं जो मुक्त हो गये हुए हैं। परमात्मा की ऐसी बाल लीला दुबारा कभी नहीं देख सकेंगे।"

"हे त्रिवेणी! मुझे मुक्ति नहीं चाहिये। मुझे परमात्मा के श्रीचरणों की प्रीति-रति दे और वह भी जो नित्य बढ़ने वाली हो प्रति क्षण बढ़ने वाली हो। ताकि जन्म जन्मान्तर अपने प्रभु की जन्म-जन्म सेवा कर सकूं।"

रामकृष्ण परमहंस से किसी ने पूछ लिया,"ठाकुर ! ये मोह, ममता, अहंकार किसी के मरते तो हैं नहीं।" ठाकुर मुंह देख कर कहते हैं,"हां! तुम ठीक कहते हो, मोह, ममता, अहंकार यह किसी के मरते तो हैं नहीं, तुम मारना भी क्यों चाहते हो, क्या बिगाड़ा है? अरे बन्धु ! इनकी दिशा बदलने की आवश्यकता है बस। संसार से जोड़ोगे तो सदा दुःख देते रहेंगे, परमात्मा से जोड़ दोगे फिर तो परमानन्द की प्राप्ति हो जायेगी, परमात्मा की प्राप्ति हो जायेगी।"

हमारे जीवन में हर प्रकार की पवित्रता होनी चाहिये, हमारी कथनी व करनी एक होनी चाहिये। Purity in thought, Purity in words and Purity in deeds also. May God bless us all.

नेक इन्सान बनें, जो एक दूसरे के काम आ सकें, एक दूसरे के काम आना ही प्रेम का चिन्ह है। परमात्मदेव सन्मार्ग पर चला, भूल से भी कुमार्ग पर न चलें।

आज का दिन परमात्मा के दरबार में वह मांगने का दिन है, जो भरत जी महाराज ने मांगा। इससे बढ़ कर और कुछ नहीं। भक्तिमय जीवन मांगिये, परमात्मा के श्रीचरणों की प्रीति मांगिये। एक ही बात है।

अति शुभकामनायें, २००६ में शुभकामनायें । २००६ ही नहीं सारा जीवन मंगलमय हो।